मधुवन ओम् शान्ति अंक 246 जनवरी 2013

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई-बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(18-12-12)

ॐ नये वर्ष की शुभ बधाईयां ॐ

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा बेफिक्र बादशाह की श्रेष्ठ स्थिति में रहने वाले, उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ने वाले, संगमयुगी पद्मापद्म भाग्यवान, भगवान के राइट हैण्ड्स निमित्त टीचर्स तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

आज नये वर्ष की नये उमंग, नये उत्साह के साथ बहुत-बहुत दिल से हार्दिक शुभ बधाईयों के साथ ईश्वरीय मधुर याद स्वीकार हो।

मीठे मीठे बाबा ने हम सबको नये वर्ष के लिए अमूल्य तोहफा दिया है - मीठे बच्चे सदा डबल लाइट रह बेफिकर बादशाह रहना। सन् 2013 को सर्व फिकरातों से मुक्त वर्ष मनाना। जिम्मेवारियां निभाते हुए जहाँ भी मेरापन आये वहाँ तेरा कर देना तो सदा फिकर से फ्री हो रूहानी फखुर में रहेंगे। यह अमूल्य सौगात पूरा वर्ष साथ रखना तो सदा निश्चिंत रहने की आदत पड़ जायेगी।

यह नया वर्ष भी अपनी नई दुनिया के आगमन की याद दिलाता है। हम सब जानते हैं कि अब यह पुराना युग गया कि गया, हमारा स्वर्णिम सुनहरा युग (सतयुग) आया कि आया। बीच में संगम का यह सुहावना समय कितनी श्रेष्ठ प्राप्तियों से सम्पन्न बनाता है। सतयुग में भल डबल क्राउन होगा परन्तु इतनी खुशी नहीं होगी, अभी तो लाइट के क्राउन के साथ पुरुषार्थ से प्रालब्ध बन रही है। अन्दर खुशी भी है तो मजा भी आता। अमृतवेले बाबा के सामने बैठते, हर समय आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार बनकर रहते तो शुभ दृढ़ संकल्प की नेचर बन जाती है, इससे मन बहुत खुश रहता है और कोई ख्याल आता ही नहीं। मन ने बुद्धि को फ्री कर दिया है इसलिए बुद्धि योग लगा सकती है, धारणा भी कर सकती है। बाबा के ऐसे बोल दिल में जाते ही दिल खुश, दिमाग ठण्डा, स्वभाव सरल हो जाता है। मन अपने आप मनमनाभव हो जाता है।

तो बोलो, अब इस नये वर्ष में कौन सी नवीनता करेंगे? अब तो बस यही संकल्प आता कि जो करना है अब कर लें, आज कर लें, कल पर कुछ भी नहीं छोड़ना। करावनहार बाबा सब कुछ करते कराते कहता है बच्चे, तुम सदा निमित्त और निर्मानचित्त बनकर नव-निर्माण करते रहना। कुछ भी हो जाए सबको सुख देना और सुख लेना। मीठी वाणी बोलना। यह रिकॉर्ड सदा अच्छे से अच्छा रखना।

मीठे बाबा के ऐसे मधुर बोल अन्दर ही अन्दर मनन चिंतन कर सदा बेफिक्र बादशाही की गहराई में जाना है। हलचल की परिस्थितियों में भी अचल रहने के लिए संकल्पों को सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाने का अभ्यास करना है। जैसे कछुआ सेकण्ड में सब अंग समेट लेता, ऐसे साक्षी बन, साथी को साथ रख सेकण्ड में सर्व संकल्पों को समाकर एक शुभ संकल्प में स्थित होने का अभ्यास अचल अडोल बना देगा।

तो आओ, हम सब ऐसे नये उमंग-उत्साह भरे संकल्पों के साथ इस नये वर्ष का स्वागत करें और श्रेष्ठ कर्मों की पूंजी जमा कर अपने वर्तमान और भविष्य को श्रेष्ठ बनायें।

इन्हीं शुभ और श्रेष्ठ मंगल कामनाओं के साथ,
सभी को फिर से नये वर्ष की मुबारक हो, मुबारक हो।

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

अव्यक्त मिलन के लिए अव्यक्त स्थिति के अनुभवी बनो

1) समय प्रमाण बापदादा सभी बच्चों को विशेष इशारा दे रहे हैं कि अव्यक्त स्थिति में स्थित रहकर व्यक्त भाव में आओ। जब एकान्त में बैठते हो तब तो अव्यक्त स्थिति रहती है लेकिन व्यक्त में रहकर अव्यक्त भाव में स्थित रहने का अभ्यास बढ़ाओ तब एकरस, कर्मातीत स्थिति तक पहुँच सकेंगे।

2) जब व्यक्त भाव से परे अव्यक्त स्थिति में स्थित होंगे तब कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म ऐसे होगा जैसे श्रीमत प्रमाण कर रहे हैं। अब अपनी अव्यक्त स्थिति के आधार से ऐसे काम करो, जैसे श्रीमत के आधार से हर काम हो रहा है।

3) जैसे अब समय नजदीक है, वैसे समय के अनुसार अन्तर्मुखता की अवस्था, वाणी से परे, अन्तर्मुख रहने, कर्मणा में अव्यक्त स्थिति में रहने का अभ्यास बढ़ाओ। कारोबार भी चले और यह स्थिति भी रहे। आप अव्यक्त स्थिति में स्थित होंगे तो अव्यक्त मुलाकात का अलौकिक अनुभव कर सकेंगे।

4) बापदादा की शुभ इच्छा है कि अब जल्दी से जल्दी बच्चे इस अव्यक्त स्थिति के अनुभवी बनें। वैसे तो आप जब साकार से साकार रीति से मिलते थे तो आप की आकारी स्थिति बन जाती थी। अब जितना-जितना अव्यक्त आकारी स्थिति में स्थित होंगे उतना अलौकिक अनुभव करेंगे।

5) अमृतवेले अव्यक्त स्थिति में वही स्थित हो सकेंगे जो सारा दिन अव्यक्त स्थिति व अन्तर्मुख स्थिति में स्थित होंगे। अगर स्नेह है और मिलने की आशा है तो यह तरीका बहुत सहज है। करने वाले कर सकते हैं और मुलाकात का अनोखा अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।

6) अव्यक्त स्थिति में महान बनने के लिए सदा याद रहे कि हम अभी मेहमान हैं। अपने को मेहमान समझेंगे तो फिर व्यक्त में होते हुए भी अव्यक्त में रहेंगे। अब अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त मिलन के अनुभवी बनो तो अव्यक्त मिलन के विचित्र अनुभव करते रहेंगे। अव्यक्त बनने से बाप के साथ निराकार बन घर में चलेंगे।

7) अब सभी को ज्यादा से ज्यादा समय अव्यक्ति स्थिति में रहने का अभ्यास करना है, इसके लिए आपस में एक दो से मिलते, बातचीत करते, शरीर में होते हुए भी आत्मा को देखो। यह पहला पाठ है, इसकी ही आवश्यकता है, इससे जब चाहेंगे तब अव्यक्त स्थिति में ठहर सकेंगे।

8) जितना संकल्पों को ब्रेक देने और मोड़ने की पॉवर होगी उतना अव्यक्त स्थिति में स्थित रहना सहज होगा। अव्यक्त स्थिति में रहने से ही शक्ति रूप बन सकेंगे। भल व्यक्त में आते हो तो सिर्फ सर्विस अर्थ, सर्विस समाप्त हुई फिर अव्यक्त स्थिति में स्थित हो जाओ।

9) व्यर्थ संकल्प और विकल्प ही अव्यक्त स्थिति होने में विघ्न हैं। यदि बार-बार इस शरीर की आकर्षण में आ जाते हो तो इसका मूल कारण है कि बुद्धि की सफाई नहीं है। बुद्धि की सफाई अर्थात् बुद्धि को जो महामन्त्र मिला हुआ है उसमें बुद्धि मगन रहे। जितना अव्यक्त स्थिति में रहेंगे उतना अतीन्द्रिय सुख में झूमते रहेंगे।

10) व्यक्त भाव से अव्यक्त भाव में कहाँ तक आगे बढ़े हैं, यह चेकिंग करो। अगर अव्यक्त स्थिति बढ़ी है तो चलन में अलौकिकता होगी। अव्यक्त स्थिति की प्रैक्टिकल परख है अलौकिक चलन। तो चेक करो कि इस लोक में रहते अलौकिक कहाँ तक बने हैं?

11) जितना अव्यक्त स्थिति में स्थित होते जायेंगे उतना नयनों के इशारों से किसके मन के भाव को जान जायेंगे। कोई से बोलने वा सुनने की आवश्यकता नहीं होगी। जैसे बापदादा के सामने जब आते हो तो बिना सुनाये हुए भी आप सभी के मन के संकल्प, मन के भावों को बापदादा जान लेते हैं। वैसे ही आप बच्चों को भी यही अन्तिम कोर्स पढ़ना है।

12) जैसे मुख की भाषा कही जाती है वैसे रूहों की रूहरूहान होती है। रूह भी रूह से बात करती, रूहों की बातें मुख से नहीं होती हैं, जितना रूहानी स्थिति में स्थित होते जाते उतना रूह, रूह की बात को सहज और स्पष्ट जान लेती है।

13) भाषण तो वर्षों से कर ही रहे हो लेकिन अब भाषणों में अव्यक्त स्थिति भरनी है, जो बात करते हुए भी सभी ऐसे अनुभव करें कि यह तो जैसे अशरीरी, आवाज से परे न्यारी स्थिति में स्थित होकर बोल रहे हैं।

14) जो अव्यक्त स्थिति के अनुभवी हैं उन्हें कोई बात में मेहनत वा मुश्किल का अनुभव नहीं होगा, सदा निर्विघ्न रूप से चलते रहेंगे। जो अव्यक्त स्थिति के साथ और भी कोई आधार पर चले हैं उनके बीच में विघ्न, मुश्किलातें आदि कठिन पुरुषार्थ देखने में आता है इसलिए अभी अव्यक्त स्थिति

में रहने का फाउण्डेशन मजबूत कर सहज पुरुषार्थी बनो।

15) जिनके व्यर्थ संकल्प नहीं चलते वह अपने अव्यक्त स्थिति को ज्यादा बढ़ा सकते हैं। शुद्ध संकल्प तो चलने चाहिए लेकिन उनको भी कन्ट्रोल करने की शक्ति होनी चाहिए।

16) अब अव्यक्त स्थिति और अव्यक्त मिलन का अनुभव बढ़ाते चलो। जो किसी भी समय मिलन द्वारा बुद्धि-बल से अपने पुरुषार्थ व विश्व-सेवा के सर्व कार्य में सफलता-मूर्त बन सको। जिस समय चाहो या जिस परिस्थिति में चाहो, उस समय उस रूप से मिलन मिलाने का अनुभव करो, अब यह प्रैक्टिस बढ़ाओ।

17) अव्यक्त मिलन का सहज तरीका है, जिससे जिस देश में जिस रूप से मिलना चाहते हो वैसा अपना वेष बना लो, तो उस वेष से उस देश में पहुंच ही जायेंगे और उस देश के वासी बाप से अनेक रूप से मिलन मना सकेंगे। सिर्फ उस देश के समान वेष धारण करो अर्थात् स्थूल वेष और स्थूल शरीर की स्मृति से परे सूक्ष्म शरीर अर्थात् सूक्ष्म देश के वेषधारी बनो, तो अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त मिलन के विचित्र अनुभव करेंगे।

18) जब तक बाप की सम्पूर्ण प्रत्यक्षता नहीं हो जाती तब तक बच्चों और बाप का मिलन तो होना ही है चाहे व्यक्त द्वारा अव्यक्त मिलन, चाहे अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त मिलन। लेकिन अब अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त मिलन के अनुभव को बढ़ाओ, नहीं तो बाप के मिलन का, प्राप्ति का और सर्व शक्तियों के वरदान का जो सुन्दर मिलन का अनुभव है, उससे वंचित रह जायेंगे।

शिवबाबा याद है ? 12-09-11 *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"कलियुगी कर्मबन्धनों से मुक्त बनना है तो कोई हिसाब-किताब नहीं बनाओ, सम्बन्ध में रहते बन्धनों से मुक्त रहना ही जीवनमुक्त अवस्था है" (दादी जानकी)

मनन करने से बाबा की प्रॉपर्टी मेरी है ऐसा अनुभव होगा। बाबा की प्रॉपर्टी से खुशी होगी, वर्सा यानि प्रॉपर्टी भी लायक बनने से मिलती है। वर्से में सबसे पहले क्या मिला? मनन शक्ति से हमारा चिंतन बड़ा अच्छा चलेगा। नहीं तो चिंतन में कभी इधर जायेगा, कभी उधर जायेगा। पर मनन करने से बाबा की जो नॉलेज है वो मन को बहुत अच्छी लगती है। दिल और मन का गहरा कनेक्शन है। दिल में कोई प्रकार का थोड़ा भी दु:ख है तो ज्ञान इतना अच्छा नहीं लगता है। ज्ञान सुनते भी तवाई माना बुद्धि कहाँ भी भटकती रहेगी। मन तन में न लग जाये, धन में न लग जाये, कहाँ स्वभाव संस्कार में न लग जाये। लोभ चोरी ठगी कराता है, मोह अन्दर से दु:खी करता है, क्रोध तो यहाँ कोई कर न सके, थोड़ा आवेश वा आवाज़ में भी बोल नहीं सकता है। तो बोलने पर ध्यान दो, कोई कैसा भी बोले, मेरी वाणी में चेंज न आवे क्योंकि आवाज़ की दुनिया से परे जाना है, यह ऐसा गुप्त और सच्चा पुरुषार्थ हो, निरंतर पुरुषार्थ में कोई भी कारण से फर्क पड़ा तो नुकसान मेरे को हुआ। पुरुषार्थ के साथ इतना प्यार हो जो कोई भी कारण से कम न हो।

मनमनाभव का मध्याजीभव से गहरा कनेक्शन है। मनमनाभव से एक तो बाबा में मन लगा पर करना क्या है? वह मध्याजीभव से होगा। बाप मिला, घर मिला अर्थात् मन को ठिकाना मिला। भटकी हुई आत्माओं को बाप और घर मिला। शिवबाबा की याद का प्रैक्टिकल प्रमाण है ब्रह्माबाबा को फॉलो करना। थोड़ा भी मतभेद वा भेदभाव है तो बाबा का जो प्यार है, पालना है, ऐसी तपस्या है वो मिस है। तो मनन से, ज्ञान का मंथन होने से ज्ञान अन्दर जाके रत्न हो जाता है। फिर एक एक ज्ञान का रत्न शब्द भी स्मृति में आया तो बड़ा अच्छा लगता है। नॉलेज बाबा की दी हुई है लेकिन मंथन से लगता है मेरी है।

कलियुगी कर्मबन्धनों से मुक्त बनना है तो कोई हिसाब-किताब नहीं बनाओ। सम्बन्ध में है पर बन्धन से मुक्त है, ऐसी जीवनमुक्त अवस्था हो। संगम पर बाबा का बनने से मुक्ति और जीवनमुक्ति का वर्सा मिला है। धीरज के बिगर कोई मीठा बन नहीं सकेगा। मन से धीरज धरो तो मन में शान्ति आती है। इसमें नफरत की दृष्टि बिल्कुल न हो, किसी के प्रति भी। तो गम्भीर, सयाने, शान्ति और धीरज से अपना पार्ट अच्छा बजाओ। दिनभर में कई बातें होती हैं पर उसे ही याद रखेंगे तो दूसरे दिन बाबा की बातें नहीं कर सकेंगे। आज्ञाकारी

बनने से, वफादार बनने से बहुत सुख मिलता है। बाबा जब जहाँ जो भी सेवा करायें, उसमें बहुत ताकत है इसलिए कभी ना नहीं कहना चाहिए। सारा दिन कर्म करते भी बाबा को ऐसा याद करो जो बाबा हमको याद करे माना बाबा से एक्स्ट्रा सकाश मिली तो फिर वो काम करती है, यह बहुत बड़ा डीप पुरुषार्थ है। बहुतकाल की याद हो, कभी लिंक टूटी हुई न हो, किसी कारण से भी ऐसी याद से याद मिलती है, जो स्वत: ही सकाश की लेन-देन हो जाती है। किसी कारण से भी हमारी बुद्धि के ऊपर कोई का भी कोई डिफेक्ट न हो। नहीं तो वो बाबा की शक्ति, सकाश, स्नेह की महसूसता नहीं होगी। बड़ा सूक्ष्म है, किसी का भी डिफेक्ट देखना और उसी अनुसार व्यवहार करना माना बाबा से इतनी सारी जो प्रॉपर्टी मिलती है उनसे वंचित होना। याद की खैंच ही नहीं होगी तो अनुभव ही नहीं होगा। निश्चय से पुरुषार्थ करो तो विजय हुई पड़ी है, हमें कभी संशय आ नहीं सकता, तो हार भी नहीं हो सकता।

तो धीरज से मीठे लगेंगे, सन्तुष्टता से श्रृंगारे हुए लगेंगे, सहनशक्ति से कठोर नहीं लगेंगे और ना ही कब एकदम कोमल बनेंगे। जिसमें सहनशक्ति कम है वो या तो कोमल होंगे या कठोर होंगे। कमलफूल समान रहने के लिये न्यारा प्यारा ऐसी स्थिति जमाने के लिये, ऊंची अवस्था में एकरस, अडोल अचल रहे, यह भावना रखने से बाबा ऐसी स्थिति बनाने में साथ देता है।

19-9-11

"सम्पूर्ण सम्पन्न बनकर, सेवा की लगन में रहना ही प्लैटिनम जुबली की खुशियाँ मनाना है"

(दादी जानकी)

जो हुआ सो अच्छा, जो हो रहा है वो अच्छा, जो होगा सो अच्छा... गैरण्टी है। कोई क्वेश्चन ही नहीं है। आज के जमाने अनुसार सर्व के प्रति सच्चाई से अच्छी भावना रखने से वर्तमान और भविष्य पद भी अच्छा होगा। सर्व विश्व की राजाई हमारे हाथ में आ रही है, वो संस्कार अभी इमर्ज हो रहे हैं। बाबा की ऐसी अनोखी पालना और पढ़ाई द्वारा चारों सबजेक्ट में फुल अटेन्शन रखने वाली आत्मा हूँ, यह साधारण बात नहीं है। तो एक बाबा का साथ, सहारा और संग तथा बहुतकाल से जो शिक्षायें मिल रही हैं उससे कई कमाल के कार्य करने में सफलता प्राप्त की है, कर रहे हैं। बाबा ने इतना प्यार किया है, इतनी ऊंची पढ़ाई पढ़ा करके हमारा दिमाग ही ठीक कर दिया है। ऐसे बाबा को हर एक दिल से लगा लेना चाहिए। कौन क्या सुना रहा है और किसको सुना रहा है, इतना भी याद आ जाये तो भी उतना समय व्यर्थ संकल्प से फ्री है। प्रेजेन्ट समय यह बहुत-बहुत ध्यान रखना है, मेरा कोई व्यर्थ संकल्प चला तो बहुत नुकसान है और मेरे कारण किसका चला तो और नुकसान है इसलिए अपना मित्र आप बन करके खुद तो व्यर्थ से फ्री हो जायें बल्कि औरों को भी व्यर्थ संकल्प से फ्री हो जाने में सहयोग देवे। हमारे श्रेष्ठ संकल्पों का सबको सहयोग मिले, ऐसी भावना हो। संकल्पों में इतनी श्रेष्ठता भरा हुआ हो, सच्चाई और प्रेम भरा हुआ हो जो उनको सहयोग मिल जाये और व्यर्थ से फ्री हो जाये। यह है आजकल अटेन्शन रखने की बातें, उड़ती कला में ले जाने वाली बातें हैं। उमंग-उत्साह है परन्तु सच्चाई और भावना के पंख नहीं है। पंछी को जब उड़ना होता है तो कोई रोक नहीं सकता है। फिर एक को उड़ता हुआ देख दूसरा भी उड़ने लगेगा। गोप-गोपियों की अंगुलियों के सहयोग से ही तो यह तीनों कैम्पस खड़े हैं। पूरी दुनिया में ऐसे स्थान में आने के लिये तरस रहे हैं, खैंच हो रही है। तब कोई दुआओं से, कोई भाग्य से चल रहे हैं क्योंकि सभी मानसिक तनाव से छूटना चाहते हैं, तो ऐसी सेवा के लिये अच्छी अवस्था बनाके रखना यह बहुत आवश्यक और पुण्य का कार्य है। बाबा से कोई भी इशारा मिलता है, तो उसे समझ करके तुरंत अमल में लाना चाहिए तब ऐसी स्थिति बनेगी। याद के बिना और कोई काम है क्या हमको! याद में रहने के लिये टाइम ही टाइम है। याद ऐसी हो जो देह, सम्बन्ध कोई याद न आये, भले शरीर में है, पर न्यारा प्यारा अनुभव हो। ऐसा हमारा योग हो जो उसका बल मिलने से हमें बाबा की खैंच हो और हमको बाबा की खैंच होती रहे। बाबा के साथ घर जाने के लिये सम्पूर्ण सम्पन्न होकर जो तैयार बैठे हैं, ऐसे आत्माओं की खुशी में प्लैटिनम जुबली मना रहे हैं। ऐसी स्थिति बनाने और ऐसी सेवा करने की लगन चाहिए।

दूसरे दिन:- हमारे बाबा ने हमारी ऐसी अच्छी जीवन बनाई तो उसके खुशी में हम सब मिल करके प्लैटिनम जुबली मना रहे हैं। परमात्मा के सत्य वचन साकार तो होना है ना। तो

अब और सब धन्धों में नहीं जाओ, इनका स्वभाव, उनका संस्कार... में न जा करके यही पुरुषार्थ करो सी फादर, फॉलो फादर। यह बहुत अच्छी बात (पुरुषार्थ) है। व्यर्थ संकल्प ही विकल्प का रूप ले लेता है इसलिए खबरदार होशियार रहना है। इसके लिए बाबा की याद हर संकल्प में, हर बोल में, हर कर्म में हो। बाबा इशारा करता था सिर में दर्द का कारण विकल्प है। पेट में दर्द का कारण यह है। सिन्ध में हमारा पुरुषार्थ था त्याग और तपस्या और सेवा थी एक दो के शुभ चिंतक रह एक दो को सावधान करके उन्नति को पाना, बाबा की यह शिक्षा प्रैक्टिकल प्रैक्टिस में लाते थे। फिर संगठन में वो सावधानी स्वीकार भी करते थे। अभी आप सब भी ऐसा पुरुषार्थ करो जो सब प्रेरित हो जाएं।

तीसरे दिन:- देह सहित सभी सम्बन्ध का त्याग किया है, उस त्याग में संस्कार भी त्याग हो जाये तो संस्कारों का संस्कार हो गया। जब से गोद बिठाके अमृत पिलाया है, इन नयनों में समाके इस दुनिया से पार जाने का रस बिठाया है। बाबा का बनने से इस दुनिया को देखने की आदत ही छूट गयी है इसलिए हमको तो एक बाबा दूसरा न कोई, नज़र ही नहीं आता है। जब से जो बाबा का बच्चा बनता है तब से ले करके पूरा जो योगी सहयोगी रहते हैं जिनके दिल में बाबा, मन में बाबा, नज़रों में बाबा रहता है, उनको उतनी ही खुशी होगी जितनी प्लैटिनम जुबली वालों को है। कई ऐसे बाबा के बच्चे हैं जो जम्प लगाके बाबा के बन उड़ रहे हैं। हम कौन हैं, किसके हैं, यह स्मृति आ गयी, ऐसे जो सिकीलधे लाडले बच्चे हैं जिसको बाबा के बनने से सुख मिलता है इलाही... का अनुभव होता है। जिसको अपनी प्लैटिनम जुबली मनानी हो उसे मनमत पर चलने का अक्ल भी न हो, परमत की परछाया भी नहीं, पुरानी दुनिया की पुरानी बातों को देखने की आदत नहीं, व्यर्थ सुनने सोचने की तो बात ही नहीं... ऐसों को देख बाबा को खुशी होती है, ऐसे बच्चों के साथ प्लैटिनम जुबली मनाना। तो हरेक देखे ऐसी खुशी मेरे पास कितनी है? कोई ऐसा सेकण्ड न आये जो मेरी खुशी चली जाये। जैसे हमारे मम्मा, बाबा और पूर्वजों की कृपा से सुख घनेरे की शिक्षायें प्राप्त हुई हैं, हम भी अगर उन जैसा पुरुषार्थ कर उनके समान बन जायें तो और क्या चाहिए! संगमयुग का ज्ञान, आत्मा का ज्ञान बाबा ने समय पर दिया है, उसे जितना स्पष्ट समझेंगे उतना ही बुद्धि से घर में पहुँचेंगे, बाबा की याद में रह सकेंगे। इस पुरुषार्थ में सावधान रहने वाली बातों की भी लिस्ट है - चलते-फिरते भी सम्भलके चलना है माना श्रीमत पर चलना है। जो खाते पीते बाबा को याद करता है उसको वो खाना हेल्दी बना देता है, अगर लालच में खायेंगे तो बीमार हो जायेंगे। पीते समय भी परमपिता की याद में पियेंगे तो वही पानी अमृत सम लगेगा।

आज बाबा ने क्या मुरली में कहा वो मेरे प्रैक्टिकल लाइफ में है या नहीं है? अगर नहीं है तो मैं अभी-अभी चेंज कर दूँ ताकि वो बात मेरे लाइफ में आ जाये, इतना ध्यान है। तो सब जीते जी मरे हुए हैं, यहाँ इस शरीर में निमित्त मात्र हैं सेवा के लिये। योग अग्नि से संस्कार समाप्त हो गये ना! एक बारी मैंने बाबा को कहा आप ही मेरे संसार हो तो संस्कार भी अपने जैसा बनाओ ना, तो बाबा ने कहा वो तो आपको बनाने पड़ेंगे। बाबा किसी को छोड़ता नहीं है। बाप और हमारे संस्कारों में कोई अन्तर न हो यह मन्त्र कभी भूलना नहीं है कि बाप और हमारे में कोई अन्तर न हो। जो बाबा से सुना है, समझा है वो सब हमारे स्वरूप में हो। बाबा से दुआयें और शक्तियाँ बहुत मिली हैं, उसके रिटर्न में उसका प्रमाण हमें अपने जीवन में सबको सहयोगी बनने में साथ देना है। जो बाबा के प्यारे हैं उनका बुद्धियोग मधुबन में लटका हुआ है। ओम् शान्ति।

31-5-12

"सब फिकरातों को छोड़ सिर्फ एक बाबा समान सम्पूर्ण फरिश्ता बनने का फिक्र रखो"

(गुल्जार दादी)

बाबा ने हम सबको अपने समान बेफिक्र बादशाह बनाया है। अब सिर्फ फिक्र है तो सम्पूर्ण बनने का, बाकी तो कोई फिकर नहीं है। बाबा आजकल हमको फरिश्ता बनाना चाहता है क्योंकि ब्रह्मा बाबा को हम बार-बार कह चुके हैं, बाबा हम साथ हैं, साथ चलेंगे फिर साथ राज्य में आयेंगे। यह सबको अच्छी तरह से पूरा निश्चय है ना? बाबा हमको छोड़कर अकेला जायेगा नहीं। हमको तो फखुर है, बाबा हमारे बिना जा ही नहीं सकता। साथ है, साथ चलेंगे। तो बाबा फरिश्ता हो गया, हमको भी फरिश्ता बनना पड़ेगा। हाथ में हाथ देके चलना है, तो श्रीमत का हाथ पक्का है? फिर भी यह अपने आपसे रिवाइज करते रहना है तो इसमें और भी पक्के बनते जायेंगे।

सुबह से लेके रात तक हमको एक एक कदम के लिये

बाबा ने श्रीमत बताई हुई है। खाओ तो भी कैसे, सोओ तो भी कैसे? जो कर्म करो वो कर्मयोगी बनके कैसे करो, एक एक कदम का बाबा ने हमको स्पष्टीकरण बता दिया है। जो बाबा ने कहा है वो हमको करना है। बस।

आपके पास इतने मेहमान आते हैं जो आपको सम्भालना पड़ता है। रौनक लगी पड़ी है, कोई न कोई प्रोग्राम होता ही रहता है। सब प्रोग्राम सेट हैं। तो बाबा कहते हैं एक तो बेफिकर दूसरा बादशाह माना मालिक हैं? बाबा कहते एक तो अपने स्वराज्य अधिकारी हो, स्व के ऊपर राज्य है। अभी आत्मा मालिक है शरीर की सर्व कर्मेन्द्रियों की फिर भविष्य राज्य तो हमारे नयनों में, मस्तक में है ही। बस कल हमारा राज्य आया कि आया। दुनिया वाले तो सोचते हैं आज तो यह हो रहा है, पता नहीं कल क्या होगा? और हम फखुर में रहते हैं कि अरे, कल तो हमारा राज्य आना ही है। यह पक्का है ना कि पता नहीं राजा बनूँगा कि क्या बनूँगा? लेकिन बाबा के बच्चे जो बने हैं, उन्हों को जरूर नशा होगा अभी हमें ज्ञान रत्नों का खज़ाना मिला है, भविष्य में उन रत्नों से खेलेंगे, अभी कोई और फिकर नहीं। फिकर है तो एक ही बाबा समान सम्पूर्ण बनने का। फरिश्ता बनके हाथ में हाथ देके चलने का। तो समान होंगे तभी तो ऐसे साथी बन साथ चलेंगे।

तो हरेक अपने से पूछे कोई भी प्रकार का गम या विचार, सोच अपने प्रति कुछ है तो नहीं? यह कमी तो महसूस नहीं होती? क्योंकि सेन्टर वालों को फिर भी सोचना पड़ता है मदोगरी है, नहीं है, जिज्ञासु आये, नहीं आये, आपको तो यह भी फिकर नहीं है। सिर्फ बाबा समान बनने का फिकर है। बाकी देखो कितने प्रकारों के फिकरातों से फारिग हो... मैं तो कहती हूँ, यह बहुत बड़ा लक है जो आपको मधुबन निवासी बनने का चांस मिला है। अपना यह स्वमान सदा स्मृति में रहना चाहिए। चाहे कोई भी ड्यूटी है लेकिन मधुबन में रहने का चांस आपको मिला, हम तो एक एक को देख करके ही खुश होते हैं कि कितने लकी हैं यह! तो अपना भाग्य हमेशा याद रखना चाहिए। और बाबा भी कहता है वाह बच्चों का भाग्य! भगवान और भाग्य दोनों की स्मृति होनी चाहिए। बाबा ने तो सभी को सन्तुष्टमणि का टाइटल दिया है और क्यों नहीं सन्तुष्ट रहेंगे, कोई अप्राप्ति नहीं है। तो यही याद रहे कि वाह मेरा भाग्य! बाबा ने खुद अपना बना दिया! आपको पता था क्या कि ऐसे मधुबन में जायेंगे, इतना भाग्य हमारा बनना है! बाबा कितना मेहरबान बना हम एक एक के ऊपर। तो जितना बाबा को हमारा भाग्य देखकर खुशी होती है, उतना हमको खुशी है! बाबा कहते अगर आप सम्पूर्ण बन जाओ तो 108 से भी बड़ी माला बना दूँगा। ऐसी ऑफर कोई कर सकता है क्या? लेकिन सिर्फ आप मेरे समान बनो। तो मधुबन वालों को यह संकल्प इमर्ज रहता है कि बाबा ने हमको भाग्य तो दिया है लेकिन उस भाग्य अनुसार जो बाबा हमारे से चाहता है वो हम कर रहे हैं? बाबा तो कहते मेरे से भी आगे जाओ।

ऐसा बाबा तो कभी मिलना बहुत मुश्किल है इसलिए दिल से हम कहते हैं मेरा बाबा। हर एक पर्सनल कहता है मेरा बाबा लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि मेरा कभी भूलता नहीं। जैसे यह मेरा शरीर है, मेरा फलाना है यह भूलता नहीं है। लेकिन बाबा कहते शरीर भान में आना माना अपनी खुशी गायब करना। बाबा तो कहता है कि सब बच्चे मेरे ऐसे खुश होने चाहिए जो चेहरे से खुशी दिखाई दे। कोई भी आवे देखे यह मधुबन वाले हैं, यह शक्ल बोले। भगवान मिला तो उसकी खुशी तो प्रत्यक्ष दिखाई देनी चाहिए ना। तो आप अपना चेहरा ऐसा देखते हो! कोई आवे तो समझे इनको कुछ मिला है कि साधारण दिखाई देंगे। यह नहीं होना चाहिए। हमको क्या नहीं मिला है, वो सोचे तो हमें कुछ कमी नहीं है। जिसे सब कुछ प्राप्त है वो खुशकिस्मत होता है, उसका खुशनुमा चेहरा होता है। तो यह अटेन्शन रखना क्योंकि मधुबन निवासी बनना कोई साधारण बात नहीं है। भले साधारण ड्यूटी कर रहे होंगे लेकिन कर्मयोगी बनके कर रहे हो तो यह विशेषता है ना। यह रोज़ रात्रि को चेक करना चाहिए कि मैं सारे दिन में ऐसा खुश किस्मतवान खुशनुमा रहा? क्योंकि अभी की खुश किस्मती जो है वो सतयुग के देवताओं के चेहरों में भी नहीं होगी। अभी तो पता है भगवान मिला है, भगवान द्वारा सारे खजाने मिल रहे हैं। सतयुग की प्राप्ति तो संगम की भेंट में कुछ भी नहीं है। संगम पर भगवान हमारा! हरेक कहता है मेरा, यह नहीं कहता है दादियों का है या पुरानों का है, नहीं मेरा है। भगवान मेरा हो गया, तो बाकी क्या रहा।

अभी मधुबन निवासियों की सेवा यही है कि मधुबन के वायुमण्डल को हमेशा पॉवरफुल बनाके रखना है - यह भी ड्यूटी है हम मधुबन निवासियों की, यह भी याद हो क्योंकि चारों तरफ मधुबन के वायुमण्डल का महत्व है, यहाँ का प्रभाव तो सब जगह जाता है ना।

समय के अनुसार यज्ञ के हिसाब से एकनामी होंगे तो एकॉनामी जरुर करेंगे। पहले तो हमको समय की एकॉनामी करनी है क्योंकि यह संगम का समय फिर मिलना बहुत मुश्किल है। एक ही समय मिलता है। संगमयुग के समय की वैल्यु को

ध्यान में रखते हुए एक मिनट भी साधारण रीति से व्यतीत नहीं करो।

मैं सोचती हूँ देखो कहाँ कहाँ से हैं सभी, बाबा की दृष्टि इन्हों के ऊपर ही पड़ी जो इन्हें ही ऐसा मधुबन निवासी बनने का चांस मिला। अगर सोचो ना बहुत बड़ा भाग्य है, यह भाग्य बहुत भाग्यवान को मिलता है। तो अपना मर्तबा जानो। कभी कोई हमेशा विचारों में ऐसे दिखाई देते हैं, जैसे कुछ खोया हुआ है, ऐसी शक्ल नहीं होनी चाहिए। चलते-फिरते, खाते-पीते शक्ल में रौनक दिखाई देनी चाहिए। हमको बहुत खुशी होती आप लोगों को देख करके वाह भाग्य! वाह भाग्य! (हमको भी आपको देखके आपसे भी ज्यादा खुशी होती है) हाँ, बहुत अच्छा हमारे से हजार गुणा खुशी होवे। मुझे देखकर सब खुश हों, इतना अच्छा भाग्य देखकर सब कमी गमी चली जायेगी, यह सेवा कम है क्या! जैसे अभी हमको कहते हो ना, ऐसे आपको भी देख करके ऐसी सेवा हो जाये क्योंकि बाबा के बच्चे हैं ना, बाबा एक एक बच्चे को देखता है। लास्ट बच्चे पर भी उतना ही प्यार है इसलिए सबका कल्याण हो, इसी भाव से देखता है। हर बच्चा भी मेरा बाबा तो कहता है, जान तो लिया कोई मिनिस्टर आदि ने पहचाना कि मेरा बाबा है! आप सभी ने तो यह तो जाना ना कि मेरा बाबा है। तो भाग्य तो आपका है, तो सदा खुशनुमा:। ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"संगम का महान तीर्थ मधुबन है सबको आशीर्वाद मिलने की भूमि"

1) यह मधुबन सर्व ब्राह्मणों के लिए महान भूमि, संगम का महान तीर्थ है। जिस मधुबन की बाबा सदैव महिमा करते, जहाँ कर्मों की रेखा बनती है। इस भूमि पर जो भी आता है वह अपने में बल भरकर जाता है। विशेष हल्का होकर, अपनी आत्मा की उड़ान भरकर जाता है। जब सवेरे अमृतवेले इस अपने प्यारे बापदादा की गद्दी पर (छोटे हाल में) बैठते, बाबा के कमरे में बैठते, झोपड़ी में जाते तो प्रैक्टिकल हमें नित्यप्रति इससे नई-नई प्रेरणायें मिलती हैं। मन्दिरों में तो मनुष्य चौकी लगाते हैं, (पहरा देते हैं) लेकिन हमारे मधुबन में दिन रात बापदादा की चौकी है। और हम उस छत्रछाया में सवेरे-सवेरे उठ सैर करते हैं। इस अपने महान भाग्य को देख अपने विशेष पार्ट को देख मस्ती भी चढ़ती तो अपने आप पर वन्डर भी खाते। कैसा है हमारा प्यारा मधुबन और कैसा है हम सब ब्राह्मणों का विशेष भाग्य।

2) कई बार बाबा के अनेक बच्चों के अनेकानेक गुणों की लिस्ट सामने आ जाती है। एक-एक के गुणों की माला सिमरण होती है। मधुबन है सबको गुणों की आशीर्वाद मिलने की भूमि। जितनी पढ़ाई है उतनी आशीर्वाद है। बाबा आशीर्वाद से हमारी जी भर देता है। बाबा का मीठा बोल याद होगा-बाबा कहे मैं अपने सर्विसएबुल बच्चों को छाती से लगाता हूँ। प्यारे बापदादा ने, प्यारी मां ने हमें कितने प्यार से पाला है। यह अव्यक्त पार्ट भी कितना मीठा है। बाबा हम हरेक बच्चे से अव्यक्त रूप से मिलता है, जितनी जिसकी स्थिति अव्यक्त बनी है, उतना अव्यक्त मिलन का सुख अनुभव करता है। अनेक बार ऐसे अनुभव होता जैसे बापदादा लाइट रूप में हमारे आगे-आगे हैं। भक्ति में भी एक रसम है, मस्तक पर कोई-कोई तीन बिन्दू लगाते हैं, इसका भी अर्थ है। बिन्दू रूप में बापदादा दोनों हमारे भ्रकुटी के तख्त पर आकर बैठ जाते हैं। और में छोटी बिन्दू उनके पास बैठ जाती हूँ। लगता है तीन बिन्दू भ्रकुटी में आकर बैठे हैं। ऐसा अनुभव होता कि बापदादा इस छोटी सी बिन्दू को अपार पावर दे रहा है। तब कहा कि सदा यह अनुभव होता कि बापदादा हमारे साथ ही है, सिर पर है। बाबा के सिवाए अपना कोई नहीं। हम बच्चे भी वन्डर खाते कि कैसे बाबा ने हमें पाया है। हमने बाबा को पाया, बाबा ने हमको पाया। कहाँ-कहाँ से खैंचकर हमें अपना बनाया है।

3) हर स्थान, हर गीता पाठशाला ब्राह्मण सो देवताओं के चैतन्य तीर्थ हैं और यह मधुबन तो विश्व की सर्व आत्माओं के लिए बड़े से बड़ा तीर्थ है, यहाँ चैतन्य में गति सद्गति दाता बाप अपना पार्ट प्ले कर रहे हैं। यह उनकी चरित्र भूमि, कर्म भूमि है, जिसने यह तीर्थ नहीं किया उसने कुछ भी नहीं किया। यहाँ से ही सबको मुक्ति जीवनमुक्ति का पासपोर्ट मिलना है। हरेक ब्राह्मण का लक्ष्य है हमें शान्तिधाम, सुखधाम जाना है। बाबा के घर जाना है।

4) मुरली में बाबा ने क्या नहीं भरा है। बाबा की मुरली भले

रिवाइज हो रही है लेकिन वह आज भी ताज़ी है, मुरलीधर की मुरली का ही गायन है। हम सोचती थी भक्त क्या रोज़ वही गीता पढ़ते हैं, इन्हों का मन कैसे लगता! परन्तु भक्त कहते जब पढ़ो तब नई प्रेरणा मिलती है। यह मुरली भी हमें नित्य नई प्रेरणा देती है। जब पढ़ो तब नई। ऐसी सच्ची गीता से हम बच्चों का कितना प्यार होना चाहिए। हमें प्यार से इसका अध्ययन करना है, मनन करना है। यह मुरली ही हम सबकी दिल को खुश करने वाली है। मुरली हमारी प्यारी है। ऐसी मुरली को कभी भी मिस नहीं करना है। बाबा मुरली के लिए हमारा अटेन्शन बार-बार खिंचवाते हैं। तो हमारा मुरली से अत्यन्त प्यार हो। यह प्यारी मुरली हमें बाबा के गले की माला बनाने वाली है।

5) हम सबका उद्देश्य है तपस्या। हम सब प्रैक्टिकली त्यागी बच्चे हैं। हम हैं ही त्याग मूर्त। कुछ भी अपना नहीं। कई बाबा के बच्चे हैं जो नित्य अपनी पढ़ाई करते, अपनी तपस्या करते। कारोबार तो निमित्त मात्र है, बाकी है तपस्या। जितना तपस्या करेंगे उतना कर्मातीत बनेंगे। लेकिन यह दिल के इन्ट्रेस्ट की चीज़ है। तो देखना है मुझे सेवा से ही प्यार है या तपस्या से भी प्यार है! दोनों का बैलेन्स चाहिए। तपस्या अपने भीतर की चीज़ है। बाकी कर्म तो साथ में हैं ही। बाबा ने हमें दिनचर्या बनाकर दी है – 8 घण्टा कर्मयोगी, 8 घण्टा नित्य की क्रिया, नींद, खाना पीना आदि... और 8 घण्टा हमारी तपस्या हो इसलिए यह संकल्प उठा कि हरेक अपनी मन्सा-वाचा-कर्मणा का चार्ट रखे, कितना घण्टा कर्मयोगी रहते, कितना घण्टा तपस्या व पढ़ाई करते। कितना घण्टा स्व प्रति देते। बैलेन्स रहता है या नहीं!

6) हम सब एक दो के साथ-साथ हैं। हम सबका लक्ष्य है - हम सब आपस में अति स्नेही बनकर रहें। इतना स्नेही जो आपस में एक दो के सदा सहयोगी बन हाथ में हाथ बढ़ाकर काम करें। आपस में स्नेह है तो बड़े से बड़ा काम भी सहज हो जाता है। अगर प्यार नहीं तो हरेक छोटी-छोटी सैलवेशन मांगता। हम आपस में बहुत-बहुत लाइट रहें। दूसरा हम सब एक दो को रिस्पेक्ट दें। तीसरा न हम किसी का अवगुण देखें और न अवगुण का वर्णन करें। अगर हम सभी जिद्द और सिद्ध करने के संस्कारों को त्याग दें तो कोई भी समस्या नहीं। मम्मा का सबसे बड़ा गुण था हां जी, जी बाबा.... मम्मा ने मुख से कभी भी दूसरा शब्द नहीं बोला

7) हम कहते सब सन्तुष्ट रहो, खुश रहो, हरेक खुद से सन्तुष्ट रहो। जब खुद सन्तुष्ट रहेंगे तब दूसरों को भी कर सकेंगे। एक भी ब्राह्मण आत्मा यह न सोचे कि मैं असन्तुष्ट हूँ। असन्तुष्टता का वातावरण खत्म करो। बाबा की बताई हुई मर्यादा पर रहो। त्याग के भी एग्जैम्पुल बनकर रहो। कोई भी छोटी मोटी बात में नाराज़ हो अपना चार्ट खराब न करो। सुखधाम का वातावरण बनाओ। अच्छा - ओम् शान्ति।

जल परिवहन, विमानन तथा पर्यटक सेवा क्षेत्र

प्राण प्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, अपनी ज्वाला स्वरूप स्थिति द्वारा संस्कार और संसार परिवर्तन करने की बेहद सेवा में उपस्थित निमित्त टीचर्स बहनें तथा सर्व ब्राह्मण कुलभूषण भाई-बहनें,

आज विशेष रूप से ट्रान्सपोर्ट ट्रेवल के जल परिवहन, विमानन तथा पर्यटन सेवा क्षेत्र से जुड़े हुए तथा इस प्रभाग के सभी सदस्यों प्रति खुशभरी भरा निमन्त्रण भेज रहे हैं कि 22 मार्च, 2013 के बापदादा के मिलन के टर्न में आप सबके लिए विशेष 2 दिन की ट्रेनिंग व मीटिंग का कार्यक्रम रखा गया है। इसके साथ आप सभी को इस क्षेत्र के लिए नवीन सेवाओं की विस्तृत जानकारी दी जायेगी

कार्यक्रम इस प्रकार रहेगा

पहुंचने की तिथि : 19 मार्च, 2013 शाम तक, मीटिंग 20 एवं 21 मार्च, 2013,
22 मार्च, 2013 - प्यारे अव्यक्त बापदादा से मिलन, 23 मार्च, 2013 प्रस्थान

अत: इसी अनुसार अपने आने-जाने की रिजर्वेशन करवा लें तथा आवास-निवास विभाग में तथा निम्नलिखित इमेल द्वारा अथवा फोन द्वारा सूचित करना जी

email: satservicesttw@gmail.com, bksantacruzest@gmail.com,
Phone: B.K.Meera Didi-09920192744, Kamlesh Bahen, 09819943234

अच्छा सभी को याद, सहयोग के लिए धन्यवाद

ईश्वरीय सेवा में,
भ्राता ओम प्रकाश जी, अध्यक्ष ट्रान्सपोर्ट ट्रेवल विभाग, बीके.मीरा, राष्ट्रीय संयोजिका, बी.के.सुमन, मुख्यालय संचोजिका